नेपोलियन

...पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग

बालचरित्र माला नं० २०

नेपोलियन बोनापार्ट

लेखक

श्री नरसिंह पाण्डेय एम० ए० एल-एल० बी०

प्रकाशक

छात्रहितकारी पुस्तकमाला

दारागंज, प्रयाग

तृतीय संस्करण १५००]   १९३९   [मूल्य ।)

प्रकाशक

बा० केदारनाथ गुप्त एम० ए०,

प्रोप्राइटर—छात्रहितकारी पुस्तकमाला,

दारागंज, प्रयाग।

मुद्रक

रघुनाथप्रसाद वर्मा,

नागरी प्रेस, दारागंज,

प्रयाग।

नेपोलियन बोनापार्ट

फ्रांस के समुद्र-तट से करीब सौ मील की दूरी पर भूमध्यसागर के बीच में बसा हुआ कार्सिका नाम का एक पहाड़ी टापू है। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक यह टापू करीब चार सौ वर्षों तक जिनोवा के आधीन था और इसलिये यह इटैली के एक प्रदेश के समान था। इसकी भाषा, बोल-चाल तथा रहन-सहन भी इटैली से मिलती जुलती थी। इस पहाड़ी द्वीप के निवासियों पर अधिकार बनाये रखना जिनोवा के लिये बहुत मुश्किल काम हो गया और इसीलिये उसने फ्राँस के हाथ इस द्वीप को बेच डाला। जब पन्द्रहवां लुई फ्राँस पर शासन कर रहा था, उसी समय सन् १७६७ में एक फ्रेञ्च सेना ने इस पर आक्रमण किया। द्वीप के निवासियों ने उनका विरोध किया, लेकिन फ्राँस की महाशक्ति के सामने उनकी कुछ चल न सकी और यह द्वीप सन १७६९ में नेपोलियन के जन्म के कुछ ही दिन पूर्व फ्राँस में मिला लिया गया। इस द्वीप के निवासी फ्राँस

के शासन को बहुत नफ़रत की निगाहों से देखते थे, तथा बहुत मर्तबा विद्रोह भी कर देते थे। नेपोलियन इसी घृणा के वातावरण में पैदा हुआ। उसने भी फ्राँस से घृणा करना सीखा, लेकिन उसके बाद के जीवन में फ्राँस उसके लिये सबसे प्यारी चीज़ बन गया। इन विद्रोहियों के नेताओं में से एक जवान वकील भी था जिसका नाम चार्ल्स बोनापार्ट था। ईश्वर ने उसे बहुत ही सुन्दर शरीर तथा अच्छा दिमाग दिया था। उसके पूर्वज इटैलियन थे तथा बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हो चुके थे। तेरहवीं शताब्दी में नेपोलियन के पूर्वज फ़्लौरेंसे के शहर को छोड़ कर कार्सिका में बस गये थे। यद्यपि इस परिवार की आर्थिक दशा एक समय बहुत अच्छी थी लेकिन वे अब गरीब हो गये थे। इसलिये चार्ल्स बोनापार्ट को अपनी जीविका के लिये वकालत का पेशा करना पड़ा था। वह सुस्त, आनन्द-प्रिय तथा खर्चीला आदमी था, हमेशा ऋणग्रस्त रहता था।

उसने लेरिशिया रैमालिनो नामक एक सुन्दरी से शादी की थी और इसी को नेपोलियन की माता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके तेरह बच्चे पैदा हुये जिनमें आठ ज़िन्दा रह सके। वकालत अच्छी चलने के कारण उनका पिता उनका अच्छी तरह पालन-पोषण

कर सका। प्रसिद्ध पूर्वजों का वंशज होने के कारण समाज में उसका आदर था, तथा दिमाग का अच्छा होने से कारण सब उसका रोब मानते थे।

अजेशियों में—जो इस द्वीप का प्रधान शहर था, इस परिवार का एक अच्छा पत्थर का मकान था तथा शहर से कुछ मील दूर समुद्र-तट पर देहात में भी एक अच्छा आलीशान मकान था, जहाँ नेपोलियन तथा उसके भाइयों ने अपने लड़कपन के दिन विताये। जब नेपोलियन पैदा हुआ उस समय उसका पिता अपना वकालत का पेशा छोड़ कर फ्राँस के आक्रमणकारियों का सामना करने के लिये युद्ध में शामिल था। इस समय नेपोलियन गर्भ में था, फिर भी उसकी माता अपने पति के साथ घोड़े पर रहती थी, १५ वीं अगस्त १७६९ को वह अजेशियों में ही थी, तथा उसी दिन सुबह के वक्त जब वह गिरजाघर से लौटी तब नेपोलियन का जन्म हुआ।

नेपोलियन के जन्म के कुछ वर्षों के बाद ही उसके पिता की मृत्यु के बाद नेपोलियन की माता अपने बच्चों के साथ अपने देहात के मकान में रहने लगी। यह मकान बहुत एकान्त में था और उसमें घास के मैदान पर लड़के खेला करते थे। वे तितली उड़ाया करते, नंगे होकर पानी

के नालों में खेला करते तथा कुत्तों की पीठ पर चढ़कर सवारी का मज़ा लेते थे।

उसी मकान के एक एकान्तस्थान में एक पत्थर की बड़ी चट्टान थी। लड़कपन के दिनों में पत्थर की यही चट्टान नेपोलियन के लिये बहुत प्रिय स्थान थी। जब उसके भाई और बहिनें खेल के आनन्द में मस्त रहते थे, तब वह उनसे दूर, इस स्थान पर चला आता था और दोपहर भर एक किताब हाथ में लेकर लेट जाता था तथा भूमध्यसागर और आसमान को घंटों तक निहारता रहता था।

नेपोलियन हँसमुख बालक नहीं था। वह हमेशा चुप्पी साधे रहता था, लोगों से कोसों दूर भागता था। वह खुशदिल नहीं था, बल्कि ऐसा मालूम पड़ता था जैसे कोई भारी विपत्ति उसे सताये है। वह लड़कों की संगति या खेल-कूद का शौकीन नहीं था। फिर भी उसके चेहरे से इतना तेज टपकता था कि सब उसका रोब मानते थे। चाहे कितनी भी सज़ा उसे दी जाय वह आँसू न बहाता और न अन्यायपूर्ण सजा के खिलाफ़ कुछ कहता ही था।

नेपोलियन ने अक्षर का ज्ञान घर ही पर किया और पाँच या छः वर्ष की उमर में वह और लड़कों के साथ स्कूल में रखा गया। जब वह छः वर्ष की उमर का

था, तभी उसकी माँ ने उसके लिये फौजी अफ़सर की तरह की पोशाक बनवा दी और जब उसकी माँ उससे खुश होती जो उसे यही पोशाक पहना देती, जिसे पहन कर वह खुशी से उछलता हुआ अजेशियों की सड़कों में घूमा करता। स्कूल में उसे एक अपनी सहपाठिनी से बहुत प्रेम हो गया! वह उसी के साथ स्कूल जाता तथा हाथ में हाथ डाल कर घर भी लौटता था। वह अन्य लड़कों की संगति छोड़ कर हमेशा उसी के साथ रहने लगा। इस जोड़ी को देख कर स्कूल के दूसरे लड़के उनकी दिल्लगी उड़ाया करते थे, लेकिन नेपोलियन उनका बिल्कुल ख्याल न करते हुए उसे अपने साथ रखता था। कभी कभी वह नाराज़ होकर अपने साथियों पर ईंटों और पत्थरों की वर्षा करने लगता था और उनकी संख्या का बिना ख्याल किये उनके ऊपर टूट पड़ता था।

अपने परिवार के एक मित्र की सहायता से वह पेरिस के निकट ब्रीन के फौजी स्कूल में भर्ती हो गया। उसने सिर्फ दस वर्ष की अवस्था में अपने को परदेश में पाया। अपने परिवार से बिदा होते हुए उसने बहुत आँसू बहाये और अपने स्कूल में भी उसका जीवन मजे से नहीं कटा। उसके साथी उसे परदेशी समझते थे और वह ऐसे मुल्क से आया था जो फ्रांस के आधीन था। वह सिर्फ

इटैलियन बोल सकता था, फ्रेंच तो उसे आती ही नहीं थी। उसके सब साथी बहुत अमीर आदमियों के लड़के थे और उनके पास रुपया पैसा बहुत रहता था। वे नेपोलियन को नफरत की निगाहों से देखते थे; क्योंकि वह एक गरीब आदमी का लड़का था और उसके पास रुपये पैसे नहीं थे दूसरे वह फ्रेंच नहीं बोल सकता था। जब उनको शरारत सूझती थी तो वे नेपोलियन के पास आते और उसे चिढ़ाया करते थे। एक दफ़ा उसने कहा, तुम लोग कितने डरपोक हो। कहाँ तुम सौ और कहाँ मैं अकेला, वैसे ही जैसे तुम तीस हजार देशवासियों ने दस हजार कार्सिकावासियों पर आक्रमण किया।

'हाँ, हारे हुए लोग ऐसे ही कहा करते हैं' एक साथी ने कहा। इस पर उसे इतना गुस्सा आया कि उसने आँखों में क्रोध के आँसू भर कर और घूँसा तान कर सब लड़कों पर आक्रमण किया। कुछ देर के बाद स्कूल के एक अध्यापक ने उसके बदन में बहुत सी चोट पायी।

इस तरह की ज़िन्दगी में रहने से उसे घृणा हो गई और इसलिये उसने अपने साथियों से दूर रहने की प्रतिज्ञा की। वह अब हमेशा अपनी किताबों के बीच रहने लगा। जब उसके और साथी खेल-कूद में अपना वक्त खराब करते थे, तब वह दिन-रात अपनी पढ़ाई में लगा रहता

था। गणित में वह खासतौर से बहुत तेज था इतिहास भूगोल तथा विज्ञान में भी उसकी बहुत रुचि थी। प्राचीन वीरों की जीवनियाँ पढ़ने में उसको बहुत शौक था। वह उनको बार बार पढ़ा करता और उनसे आनन्द उठाता। जल्द ही स्कूल में वह सब से तेज विद्यार्थी गिना जाने लगा।

सन् १७८४ में जाड़े का मौसम बहुत ठंडा था। बरफ खूब पड़ी और उससे खेल के मैदान वगैरह बिलकुल ढक गये, जिससे कि उस स्कूल के विद्यार्थी बाहर बिलकुल नहीं खेल सकते थे। वक्त बिताने के लिये नेपोलियन ने यह सलाह दी कि वह बरफ के किले बनावें। उसने किला बनाने की कला को बहुत परिश्रमपूर्वक सीख रक्खा था और इसलिये उसके हुक्म के मुताबिक सब काम ठीक तौर से किया गया। नेपोलियन ने अपने साथियों को दो हिस्सों में बाँट दिया। पहले का काम किले की रक्षा करना और दूसरे का काम आक्रमण करना था। वह खुद उनका अफसर बना, और उसकी अध्यक्षता में बनावटी लड़ाई कई हफ्तों तक चलती रही, जिसमें कइयों को बहुत चोटें आईं

नेपोलियन ब्रीन के स्कूल में करीब पाँचवीं कक्षा तक रहा। वह अपनी छुट्टियों के दिन कार्सिका में ही

बिताता था। उसे अपने देश से बहुत प्रेम था, और पहाड़ियों, घाटियों तथा जंगलों के बीच घूमना उसे बहुत पसन्द था। उसे अपने देश के नेता पवाली से बहुत प्रेम था और एक मर्तबा जब उसके एक अध्यापक ने उसे चिढ़ाने के लिये पवाली को भला-बुरा कहा, तब उसने तुरन्त जवाब दिया, महाशय ! पवाली एक बहुत बड़ा आदमी था, उसे अपने देश से प्रेम था। मैं अपने बाप को कभी नहीं क्षमा करूँगा कि उसने फ्रांस और कार्सिका के मिलाप की रज़ामन्दी दी।

धीरे-धीरे नेपोलियन को अपने स्कूल से प्रेम हो गया। उसकी एक लड़के से गहरी दोस्ती हो गई, जिसका नाम बोरीन था। उस लड़के की भी उमर ठीक नेपोलियन जैसी थी, बोरीन और लड़कों के साथ नेपोलियन को चिढ़ाने में शामिल नहीं होता था। एक दफा नेपोलियन ने उससे कहा, बोरीन ! मैं तुम्हें बहुत पसन्द करता हूँ, तुम कभी भी मेरी हँसी नहीं उड़ाते।

नेपोलियन की हस्तलिपि लड़कपन से ही बहुत खराब थी, जिसके कारण उसे हस्तलिपि के अध्यापक से बहुत डाँट खानी पड़ती थी। बरसों बाद जब नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बन गया था और जब वह एक दिन जोसेफीन के साथ सेन्ट कलाउड के भवन में विश्राम कर

रहा था; एक बुड्ढे आदमी ने प्रवेश किया और सम्राट के सामने काँपते हुए आने को ब्रीन का हस्तलिपि का अध्यापक बतलाया। नेपोलियन ने पहले तो गुस्सा दिखलाया लेकिन फिर उससे खुश होकर उसे पेन्शन देने का हुक्म दिया। अपने बड़प्पन के दिनों में भी वह उन आदमियों को जिन्होंने उसके साथ भलाई की थी, कभी नहीं भूला। पेरिस के मिलिटरी स्कूल में जाने के पहले उसकी परीक्षा हुई। नेपोलियन के बारे में उसके परीक्षक ने बहुत तारीफ की।

पेरिस का मिलिटरी स्कूल भी ऐश आराम के सब सामानों से भरा पुरा था। इसके तीन सौ विद्यार्थियों में से हर एक के पास एक नौकर, उनके घोड़े की रखवाली करने के लिये, उनके औजारों को साफ करने के लिये, उनके जूतों को साफ़ करने के लिये तथा अन्य कामों के लिये रहते थे। यह स्थान भी उसे अच्छा न मालूम पड़ा। यहाँ पर भी उसके साथी अभिमानी और अमीर थे और उस परदेशी लड़के से नफ़रत करते थे! यहाँ पर भी वह अपना समय पढ़ने-लिखने में ही बिताता था।

इसी समय सन १७८५ में उसके पिता की मृत्यु हो गई। अपने पिता की मृत्यु से उसे रंज तो बहुत

हुआ, लेकिन बहुत धैर्य के साथ उसने इस विपत्ति का सामना किया और अपनी माँ तथा भाई बहनों को यकीन दिलाया कि वह हमेशा उनकी रक्षा करने के लिये उद्यत रहेगा। उसने अपनी माँ को एक पत्र में यह लिखा—चूँकि अब समय ने मेरे शोक के प्रथम उबाल को दूर कर दिया है, मैं आपको अपनी दया-जनित उपकार का यकीन दिलाता हूं। मेरी प्यारी माँ, तुम अपने दिल को ढाढ़स दो क्योंकि परिस्थितियाँ ऐसी ही हैं। हम रह कर आपकी आज्ञा मानकर आपके प्रिय पति की क्षति की पूर्ति करेंगे.... ।

इसके कुछ दिन बाद ही उसके अफ़सर नियुक्त होने के पूर्व परीक्षा हुई। गणित में तो वह सर्वप्रथम हुआ ही, उसके इतिहास के जवाबों से उसका अध्यापक इतना खुश हुआ कि उसने इसके बारे में लिखा 'यह जन्म से तथा चाल-चलन से कार्सिकन है। यह नवजवान आगे बढ़ कर ज़िन्दगी में तरक्की करेगा अगर भाग्य इसके अनुकूल रहा।'

इसके बाद नेपोलियन तोपखाने विभाग का अफ़सर नियुक्त हुआ। इसके बाद वह क्रमशः वैलेस, लियोन्स तथा अन्य स्थानों में रहा। उसे अक्सर बीच-बीच में छुट्टियाँ मिलती थीं जिन्हें वह कार्सिका में बिताता था।

नेपोलियन की तनख्वाह बहुत कम थी और इसी में उसे अपने परिवार की गुज़र करनी पड़ती थी, इसलिये वह बहुत कम खर्चीला था। अक्सर वह अपना भोजन स्वयं बनाता था, उसके कमरे में एक मेज़, दो कुर्सियाँ और एक बिस्तरे के अलावा और कोई सामान नहीं था। इस समय के अपने जीवन के बारे में उसने लिखा है 'मैं दस बजे सोने जाता हूं और सवेरे चार बजे उठ जाता हूं। मैं एक दिन में सिर्फ एक बार भोजन करता हूँ और वह तीन बजे के करीब ?'

इसी समय फ्राँस देश में विद्रोह की आग भभक उठी, फ्राँस के निवासियों ने अपने बादशाह की शक्ति को क्षीण कर उसे एक कठपुतली बना दिया था। फ्राँस के अमीर और जमींदार देश से भागे जा रहे थे, यह घोषणा कर दी गई थी कि देश का हर एक आदमी कानून की निगाहों में बराबर है। नेपोलियन के कार्सिका में अक्सर जाने का यही सबब था। वह अब भी अपने मुल्क को वैसे ही प्यार करता था और यह चाहता था कि कार्सिका फ्राँस के चंगुल से मुक्त हो जाय। उसने कार्सिका में स्वयंसेवकों की एक फौज तैयार की और उनका कर्नल वही चुना गया। इस तरह हर तरह से उसने मुल्क को आज़ाद करने की कोशिश की।

मई के महीने में जब वह अपने मुल्क से लौटा तो हमेशा गैरहाज़िर रहने की वजह से वह फौज से निकाल दिया गया। तब वह पेरिस चला आया और वहाँ एक कमरा किराये पर लेकर रहने लगा। यहाँ पर वह बहुत ही कम खर्चे में अपना जीवन बसर करता था। किसी नाच या तमाशों में पैसा खर्च न करता। अपने वक्त का अधिक हिस्सा पुस्तकालयों में किताबें पढ़कर बिताता था, उसे बड़े आदमियों से बातें करने का भी बहुत शौक था। उस समय वह अपने भविष्य का स्वप्न देखने में भी बहुत मस्त रहता था; फ्राँस और यूरोप उसकी नज़रों के सामने बहुत तुच्छ मालूम पड़ता था। वह बहुत चाव के साथ एशिया तथा रहस्यमय पूर्व के निवासियों के बारे में पढ़ा करता था और यह भी स्वप्न देखा करता था कि कभी वह इसी मुल्क में एक सल्तनत कायम करेगा।

इसी समय पेरिस में कुछ घटनायें ऐसी हुईं जिनसे वह बहुत प्रभावित हुआ। २० वीं जून सन् १७९२ को जब वह बोरीन के साथ सीन नदी के किनारे पर घूम रहा था, उसने एक बड़ी भीड़ को नाना प्रकार की आवाजें करते, हथियार घुमाते, अपने कैदी बादशाह के भवन की ओर बढ़ते देखा। 'आओ हम लोग भी इनके साथ चलें' यह कह कर वह आगे बढ़ा और नदी के

किनारे से खड़ा होकर उस जन समूहों की करतूतों को नफरत भरी निगाहों से देखा। उसने देखा कि तीस हज़ार दुष्टों ने भवन के ऊपर आक्रमण किया; यहाँ तक कि वे राजा के अन्तर्भवन में भी घुस पड़े, राजा का अपमान किया और उसे प्रजातंत्र की लाल टोपी पहनने को बाधित किया। इस असह्य दृश्य को देखकर सैनिकों की कायरता पर उसने कहा—ये कितने दुष्ट हैं! उन्होंने इस जनसमूह को राजभवन में प्रवेश करने क्यों दिया। उन्हें प्रथम पाँच सौ को तोपों से उड़ा देना चाहिये था और तब बाकी स्वयं ही भाग जाते।

इसी प्रकार का उसने १० वीं अगस्त को भी एक दृश्य देखा। इससे उसके दिल में साधारण जनता के प्रति जो इस प्रकार के क्रूरता और नीचता का काम करने में लगी थी, घृणा हो गई, और उसने यह भी समझ लिया कि फ्राँस के निवासी अभी अपने शासन करने के काबिल नहीं हैं और उन्हें एक बड़े आदमी की ज़रूरत है जो उन्हें ठीक रास्ते पर लावे।

इस समय वह गरीबी का जीवन बिता रहा था। वह बोरीन के साथ पेरिस की सड़कों पर घूमा करता था और निहायत सस्ते होटलों में भोजन करता था। उन दोनों में बोरीन की आर्थिक अवस्था बेहतर थी, इसलिये

उसी को दोनों का बिल चुकाना पड़ता था। एक मर्तबा ऐसी हालत पहुँच गई थी कि उसे अपनी घड़ी गिरवी रख कर भोजन करना पड़ा था।

सन १७९२ के शरदकाल में वह फिर कार्सिका लौट आया। इसी समय उसके देश का नेता पवाली अपने देश के साथ दगा करके अपने मुल्क को इङ्गलैंड के हाथ बेचना चाहता था, लेकिन नेपोलियन को भी मिलाना चाहा, वह राजी न हुआ और पवाली से लड़ बैठा। जिस के परिणाम-स्वरूप पवाली के कहने पर बहुत से पहाड़ियों ने उसके मकान पर हमला किया और नेपोलियन के परिवार को आधी रात के वक्त एक नाव पर चढ़ कर भागना पड़ा। तब से वह हमेशा के लिये फ्राँस चला आया और वह फ्राँस को प्यार करने लगा।। अपने जीवन के पिछले दिनों में वह कार्सिका एक मर्तबा और आया लेकिन अब उसके दिल में उन कार्सिका-निवासियों के प्रति ज़रा भी प्यार नहीं था, जिनकी रक्षा में उसे इतना अत्याचार और अपमान सहना पड़ा था। हाँ, अब भी उसे अपने मुल्क की पहाड़ियों, घाटियों और समुद्र की याद बनी रही।

इसी बीच में उसने अपने अफ़सरों से अक्सर छुट्टियाँ लेने का सबब बता दिया, और वह फिर अपनी

जगह पर नियुक्त कर दिया गया था। इसी समय फ्राँस पर विपत्ति के बादल घिर आये थे, फ्राँस के दुश्मन उस पर चारों ओर से हमला कर रहे थे। इनमें से इङ्गलैंड भी था, जिसने टूलोन नामक शहर को अपने कब्जे में कर लिया था। फ्राँस की सरकार ने उसे वहाँ पर भेजा।

यहाँ आकर उसने दिन रात काम करना शुरू कर दिया। उसे सोने के लिये बहुत कम फ़ुर्सत मिलती थी, अगर वह सोता भी, तो अपनी बन्दूकों को अपनी बगल में रख कर। उसकी बहादुरी से सैनिकों की जान में जान आई, अपने व्याख्यानों से उसने सिपाहियों में जोश भर दिया। नतीजा यह हुआ कि ब्रिटिश नाविक सेना को यह स्थान छोड़ना पड़ा और यह स्थान फ्राँस के हाथों में सुरक्षित बना रहा।

नेपोलियन का हृदय इतना कोमल था कि कई दफे उसने लाचार और मदद से रहित व्यक्तियों को अपनी जान ख़तरे में डाल कर बचाया। एक बार ऐसा हुआ कि एक स्पेन का जहाज़ पकड़ा गया, जिसमें चढ़ कर फ्राँस का एक बहुत बड़ा परिवार अपने मुल्क से भाग रहा था। शहर के निवासियों ने यह समझा कि वह भी प्रवासियों तथा दुश्मनों की सेना के साथ जो पेरिस की ओर बढ़ रही थी—जा रहे थे, उनको घेर लिया और

उनको उसी वक्त फाँसी देने के लिए ले चले। फौजी शहर के रक्षकगण उस परिवार को बचाने के लिये आये भी, लेकिन वे नाकामयाब हुये। नेपोलियन भी वहीं था, और उसने उस भीड़ में कई तोपवाले आदमियों को भी देखा जो उनके अन्दर काम कर चुके थे। इसलिये वह एक प्लैटफ़ार्म पर चढ़ गया और वहाँ से एक ऐसी स्पीच दी कि वे तुरन्त ही उन प्रवासियों को नेपोलियन के हाथ सुपुर्द करने को राज़ी हो गये, जिससे कि दूसरे दिन उनको अदालत से सज़ा दी जाय। आधीरात के करीब उसने उनको तोपखाने की गाड़ी में रख दिया तथा उन्हें पाउडर के पीपों के अन्दर छिपा दिया, और तब वे शहर के बाहर फौज के और सामान के साथ भेज दिये गये। इस प्रकार अपनी उदारता से उसने एक परिवार की जान बचाई।

टूलोन की इस सफलता से नेपोलियन की इज्जत सेना में बढ़ गई, और सब लोग उसकी चालाकी और बहादुरी की तारीफ़ करने लगे। शहर के एक अफसर ने कार्नो (कमाँडर) के पास लिखा, 'मैं तुम्हारे पास एक नौजवान आदमी को भेजता हूँ जिसने टूलोन के घेरे में बहुत कमाल का काम किया, और मैं आपसे हिदायत करता हूँ कि आप उसे शीघ्र आगे बढ़ावें। अगर आप

ऐसा नहीं करते, तो वह स्वयं अपने को आगे बढ़ायेगा।'

टूलोन के बाद नेपोलियन जनरल डूगोमियर के साथ मारसेल्स को गया। एक दिन जब वह अपने जनरल के साथ कहीं जा रहा था, तो एक आदमी ने उसकी औरतों सी सूरत देख कर कहा, "वह छोटा सा अफसर कौन है और उसे आपने कहाँ पाया?"

इस पर उस जनरल ने जवाब दिया—इस अफसर का नाम नेपोलियेन बोनापार्ट है; मैंने उसे टूलोन के घेरे के वक्त चुना है, और उस घेरे की सफलतापूर्ण समाप्ति में उसका बड़ा हाथ रहा है; तुम सम्भवतः एक दिन देखोगे कि यह छोटा सा अफ़सर हम सबसे बड़ा आदमी हो जायगा।

जनरल बोनापार्ट

सन् १७९४ के फ़रवरी महीने में अपनी सेवाओं के पुरस्कार-स्वरूप नेपोलियन ब्रिगेड का जनरल नियुक्त किया गया। लेकिन उस अशान्ति के समय में उनके भी बहुत दुश्मन थे। उनमें से एक ने उसके खिलाफ़ दगा-बाज़ी करने का विचार करने का इलज़ाम लगाया। इसका नतीजा यह हुआ कि वह जेल में डाल दिया गया, लेकिन कुछ समय के बाद ही उसकी रिहाई भी होगई।

सन् १७९५ के गर्मी के मौसम में उसे जनरल हाश की सेना में, जो कि पच्छिम में फ्रांस के राजा की

पार्टीवालों से लड़ रही थी–शामिल होने की आज्ञा मिली। लेकिन उसने इस आज्ञा को मानना अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह अपने ही देशवासियों के खिलाफ़ लड़ना नहीं चाहता था। इससे वह फिर फौज से निकाल दिया गया।

लेकिन वह इस तरह वेकार बहुत दिनों तक न रह सका, क्योंकि शीघ्र ही ऐसा मौक़ा आ पड़ा जबकि फ्रांस की सरकार को उसकी शरण लेनी पड़ी। बात यह थी कि 'कन्वेन्शन' (फ्रांस की पार्लामेन्ट) ने ऐसा कानून पास किया था जिससे पेरिस के बहुत से मुहल्ले बिल्कुल नाराज़ हो गये थे और उन लोगों ने विद्रोह की तैयारी की थी। जून १७९५ को ऐसा मालूम पड़ता था कि विद्रोह बहुत करीब है और इसलिए सरकार ने अपनी रक्षा का प्रबन्ध करना शुरू कर दिया। बैरास सरकारी फौज का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। यह स्थान बहुत ख़तरनाक था; क्योंकि सरकार बिल्कुल निराश हो चुकी थी, और विद्रोहियों का सामना करने के लिए कोई सूरत नज़र नहीं आती थी। बैरास पहले तो हिचकिचाया, लेकिन उसे अचानक नेपोलियन का स्मरण हो आया, और तब वह चिल्ला उठा—'मैं उस आदमी को जानता हूँ जो हम लोगों की रक्षा कर सकता है। यह एक नौजवान कार्सिकन अफसर नेपोलियन बोनापार्ट नाम

का है, जिसकी फौजी योग्यता को मैंने टूलोन में देखा था।' नेपोलियन उस समय पार्लामेन्ट की गैलरी में था, और उसकी सूरत को देख कर वैरास को उसके कार्यों की याद आगई।

वह तुरन्त कन्वेन्शन के सामने लाया गया। वे समझते थे कि नेपोलियन एक बड़े डीलडौल का हृष्ट-पुष्ट आदमी होगा, लेकिन उनको यह देख कर ताज्जुब हुआ जब एक छोटा, दुबला-पतला, पीला पीला सा चिकने गालोंवाला १८ वरस का नौजवान उनके सामने खड़ा होगया। प्रेसिडेन्ट ने कहा, 'क्या तुम कन्वेन्शन की रक्षा का भार उठाना स्वीकार करते हो?' और फिर कहा, 'क्या तुम यह समझते हो कि तुम्हें कितना बड़ा काम दिया गया है?'

नेपोलियन ने कहा—'जी हाँ, बिलकुल अच्छी तरह। मेरी आदत है कि जिस काम को मैं उठाता हूँ उसे पूरा करके दिखलाता हूँ!' इसके बाद उसे कन्वेन्शन की सेनाओं का पूरा अधिकार दे दिया गया।

इस नौजवान अफ़सर की काम करने की ताक़त सब को अचम्भित कर देती थी। वह सब जगह पर रात के वक्त दिखाई पड़ता, वह हर एक चीज की देख-भाल स्वयं करता, और सैनिकों में नया जोश भरता।

उसके हुक्म से तोपें चारों तरफ़ से लाई गईं और ट्यूलरीज (फ्रांस का राजभवन और पार्लामेन्ट भवन) से निकलनेवाली हर सड़क पर तोपें रख दी गईं। क़रीब शाम के वक़्त जब जनसमूह के एक आदमी ने बंदूक छोड़ी तो उसने फ़ौज को तोप चलाने का हुक्म दिया। शीघ्र ही पैरिस की सड़कें साफ़ हो गईं, कन्वेन्शन की जीत हुई उसने फ्रांस को एक अन्दरी लड़ाई से बचा दिया।

इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिसका नेपोलियन के जीवन पर बहुत असर पड़ा। उपरोक्त घटना के बाद ही पैरिस के कई मकानों में हथियारों के लिए तलाशी ली और इन मकानों में से एक मकान जोसेफ़ीन का था, जो फौज एक के मृत अफ़सर की विधवा थी। इस तलाशी में उसके मरे पति की तलवार भी हटा ली गई थी, दूसरे दिन यूजेन (जोसेफ़ीन का लड़का) उस तलवार के लिये याचना करने को आया। नेपोलियन ने उसकी तलवार लौटा दी, और दूसरे दिन जोसेफ़ीन उसको धन्यवाद देने के लिये आई। उस सुन्दर मुख को देखते ही नेपोलियन उस पर मोहित होगया, और हालाँकि वह उमर में उससे बड़ी थी फिर भी वह उसे जी जान से प्यार करने लगा। उसकी संगीतमयी वाणी में ऐसा माधुर्य था जो चित्त को आकर्षित किये बिना नहीं रह सकता था। जोसेफ़ीन की बैरास

से मित्रता थी और दोनों उसीके घर पर मिला करते थे। बैरास ने उन्हें शादी करने की सलाह दी और कुछ दिनों के बाद यह शादी हो ही गई।

एक हफ्ते के बाद नेपोलियन देश के अन्तरंग स्थित सेनाओं का दूसरा कमाण्डर नियुक्त हुआ, और इसके बाद ही एक पखवारे के अंदर जब बैरास ने चीफ़-कमाण्डर की जगह से इस्तीफा दे दिया, तब नेपोलियन उसकी जगह बन बैठा।

इस समय भी पेरिस में अशान्ति का राज्य था, अक्सर फौज के मार पीट की नौबत आजाती थी, लेकिन नेपोलियन कभी-कभी अपने मुसकानों से ही खतरे को दूर कर देता था। उसके जीवन की एक कथा बहुत मशहूर है।

एक समय एक मोटी तगड़ी मछुआ जात की औरत सरकार के खिलाफ़ बहुत जोशीला व्याख्यान दे रही थी। उसी समय नेपोलियन और उसके कुछ सैनिक घटनास्थल पर आ पहुंचे। उनको देख कर वह चिल्ला उठी, इन सिपाहियों को देखकर घबड़ाओ मत। वे इस बात की परवाह नहीं करते कि ग़रीब लोग भूखों मर रहे हैं, जब तक कि वे स्वयं मोटे बने रहें।'

नेपोलियन ने उसके मोटे बदन को ग़ौर से देखा और

कहा, "श्रीमती जी, कृपया मेरी ओर तो देखिये। हम दोनों में कौन ज्यादा मोटा है?"

इस पर वह औरत कायल होगई और जनता के सब लोग उस पर हँसने लगे, और विद्रोह की आग शान्त होगई।

इटली पर आक्रमण

सन् १७९६ में नेपोलियन सिर्फ़ २६ बरस की उमर में इटली की सेना का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उसकी नियुक्ति के समय डाइरेक्टरों में से एक ने कहा, "इतनी भारी ज़िम्मेदारियों को सहन करने, तथा बहुत बड़े जनरलों के ऊपर शासन रखने के लिये आपकी उमर बहुत कम है।"

इस पर नेपोलियन ने जवाब दिया, "एक साल में या तो मैं बुड्ढा ही बन जाऊँगा या मर जाऊँगा।" उसने एक साल के अन्दर ही अपने कामों से अपने कथन की सत्यता प्रमाणित कर दी।

उसकी फौज के अन्य अफ़सर भी एक नौजवान आदमी की मातहती में रक्खे जाने से बहुत असन्तुष्ट से थे। लेकिन नेपोलियन उनके ऊपर रोब जमाने का तरीक़ा खूब जानता था। वह अपनी स्थिति का ख्याल करते हुये शान के साथ रहता, कभी उनको मुँह न लगाता

था। उसकी मुस्कराहट किसी के भी दिल को जीत सकती थी और उसका भौंह चढ़ाना बहादुर से बहादुर आदमी के दिल में भय पैदा कर सकता था।

इटली की सेना में एक सैनिक अपनी गुस्ताखी के लिये बहुत मशहूर था। नेपोलियन ने उसे अपने पास बुलाया और उसे ऐसी निगाहों से देखा कि वह भीगी बिल्ली की तरह दुम दबा कर चला आया और बोला, "इस छोटे जनरल ने मुझे बहुत भयभीत कर दिया।"

नेपोलियन की सेना भी बहुत ख़राब हालत में थी। सैनिकों को न तो ठीक कपड़े मिलते थे और न ठीक खाने को, फिर भी सरकार ने हुक्म दे दिया था कि फौज के ऊपर वह और कुछ ख़र्चा न कर सकेगी।

इस हालत में भी उसने अपनी सैनिकों को जोश दिलाया और उन्हें यक़ीन दिलाया कि वे एक नये और धनी मुल्क को जीत कर हर एक चीज़ को प्राप्त कर सकेंगे। इटली में पहुंच कर उसने बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ीं और आस्ट्रियावालों को मुल्क से मार भगाया। इनमें जो बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ लड़ीं वे मान्टीनाट, लोदी और आरकोला हैं। लेकिन लोदी में उसने जो बहादुरी दिखलाई वह ज़िक्र करने योग्य है।

नेपोलियन ने आस्ट्रियावालों को लोदी के शहर से

बाहर भगा दिया था, उन्होंने अद्धा नदी को पार कर दूसरे किनारे पर बहुत मज़बूती के साथ अपने को जमा लिया था। नदी के आर-पार जाने के लिये सिर्फ़ एक तंग लकड़ी का पुल था और इस पुल पर आस्ट्रिया ने अपनी तोपें बैठा रक्खी थीं। इस कारण से कोई भी फ्रेंच सैनिक पास जाने का साहस नहीं कर सकता था।

लेकिन यह बात देर तक न रहने पाई। नेपोलियन ने एक जोशीला व्याख्यान दिया और छः हज़ार सैनिकों को चुना। उसके हुक्म के पाते ही सब सैनिक पुल पर कब्जा करने के लिये दौड़ पड़े। उनके ऊपर तोपों और बन्दूकों के गोलों की वर्षा हुई, वे कुछ ही दूर आगे बढ़ पाये थे कि नेपोलियन तथा उसके अन्य अफ़सर उनकी मदद के लिये दौड़ पड़े। नेपोलियन का दूसरा आदमी उस पुल को पार करने वाला था। उसकी बहादुरी से सैनिक भी जान को हथेली में रख कर बढ़ पड़े, और आस्ट्रिया की फौज को लौटना पड़ा।

फ्रांस और आस्ट्रिया के बीच की लड़ाई कैम्पोफो-मियो की सन्धि के अनुसार खतम हो गई। आस्ट्रिया को नेपोलियन की शर्तें माननी पड़ीं। जब वह वहाँ से लौटा, तो फ्रांस में उसका खूब स्वागत हुआ।

—:o:—

मिश्र पर आक्रमण

आस्ट्रिया को हरा लेने के बाद फ्रांस का सिर्फ एक दुश्मन बाकी रह गया और वह था इंगलैन्ड जो कि उसके दुश्मनों में से सबसे मजबूत था। नेपोलियन ने स्वयं कहा है–हमारी सरकार को इङ्गलैन्ड का नाश करना चाहिये नहीं तो उसे यह उम्मेद रखनी चाहिये कि ये फुर्तीले द्वीपवासी इसका नाश कर देंगे। फ्रांस की सरकार ने अब उसको 'इङ्गलैन्ड की सेना' का अध्यक्ष बनाया। नेपोलियन को पूर्वीय देशों से बहुत प्रेम था, और वह उन देशों को जीत कर एक राज्य क़ायम करना चाहता था। इसलिये १० वीं मई, १७९८ को वह टूलोन से ४०० जहाज़ों तथा ३८००० आदमियों को लेकर रवाना हुआ। उसे पढ़ने-लिखने से इतना प्रेम था कि उसने अपनी यात्रा के लिये कुछ किताबें भी लेलीं। उसके साथ सौ के करीब विद्वान, विज्ञानवेत्ता, कलाकार और इंजीनियर भी थे, जो ज्ञान की वृद्धि करने के उद्देश्य से उसके साथ जा रहे थे।

उसी समय भूमध्यसागर में नेलसन अपनी नाविक सेना के साथ फ्रेंच सेना को पकड़ने के लिये बैठा था। लेकिन नेपोलियन उनसे आँख बचाकर चला आया और एलेजैन्ड्रिया पहुंच कर इस पर अपना कब्जा जमा लिया

इसके बाद उसने कैरो पर चढ़ाई शुरू कर दी। यह चढ़ाई बहुत मुश्किल थी, क्योंकि ठंढे मुल्कों से आनेवाले सिपाही गरम मुल्कों की तेज़ धूप और हवा को बरदाश्त नहीं कर सकते थे। जलते हुये रेगिस्तान के बीच से चलने में भूख, प्यास और मृत्यु का सामना करना पड़ा। कई प्यास के मारे मर गये, कइयों की आँखें खराब होगई और कितनों ही ने आत्महत्या कर ली। तीन हफ़्ते तक ऐसे चलने के बाद पिरामिड नज़र आये और वहाँ पर उसने उस देशवासियों को लड़ाई में हराया। उसने इस स्थान पर अपने सैनिकों को जोश दिलाने के लिये कहा, सैनिकों! इन पिरामिडों के शिखर से चालीस सदियाँ तुम्हें देख रही हैं।

जब नेपोलियन इधर जीत रहा था, उसी समय नेलसन ने आकर फ्रांस के सब जहाजों को डुबो दिया नेपोलियन यह खबर सुनकर बहुत चिंतित हुआ कि उसके फ्राँस लौटने का रास्ता अब बन्द हो गया, लेकिन वह निराश नहीं हुआ और कहा—अच्छा, अब हम लोगों को इसी मुल्क में रहना चाहिये और बड़ा बनना चाहिये जैसा कि प्राचीन काल के लोगों ने किया। यही वह समय है जबकि एक ऊँची और बड़ी कौम के गुण प्रगट होते हैं।

इसी समय यह सुन कर कि टर्कों के सुल्तान ने

उसके ऊपर लड़ाई छेड़ दी उसने सीरिया पर आक्रमण करने का इरादा किया, जिससे वह बाद में कुस्तुन्तुनिया या भारतवर्ष पर भी अक्रमण कर सके। मिश्र देश और सीरिया के बीच का रेगिस्थान पार करना अत्यन्त ही मुश्किल काम था। सैनिकों को बालू के तूफान के बीच से, जो आँधी उनके मुँह पर लाकर डाल देती थी चलना पड़ा। लेकिन फिर भी उन्होंने गाज़ा और जाफ़ा पर कब्जा कर लिया। एकर नामक स्थान के लिए लड़ाई दो महीने तक होती रही लेकिन नेपोलियन इसमें सफल नहीं हुआ। इसके बाद वह फिर कैरा को लौट आया, और तीन सौ मील की दूरी को २६ दिन में पार कर गया।

कुछ दिनों बाद उसने तुर्कों पर एक बार और विजय पाई; अबूकिर नामक स्थान पर १०००० तुर्कों की जानें गईं। उस लड़ाई का वर्णन उसने स्वयं किया है—'यह सबसे अच्छी लड़ाइयों में से, जिन्हें मैंने अपनी आँखों देखा है, एक थी। दुश्मनों की जितनी फौज उतरी उनमें से एक भी नहीं बचा'।

उसी समय उसके मुल्क से ऐसी ख़बर मिली जिससे उसको लौटना पड़ा। उसके न रहने पर फ्रांस के दुश्मनों ने एक और संगठन तैयार किया, फ्रेंच सेना इटली से भगा दी गयी थी और यह खतरा था कि कहीं

फ्रांस ही पर आक्रमण न हो जाय। इसके अलावा फ्रांस की सरकार (डाइरेक्टर) बहुत कमजोर थी, और अपनी नालायकी और गलतियों की वजह से बहुत अप्रिय हो गई थी। इसलिये नेपोलियन अपने सैनिकों को बिना बताये ही २१ वीं अगस्त सन् १७९९ को वहाँ से कुछ अफ़सरों को लेकर चल पड़ा। रास्ते में लौटते हुये वह कार्सिका के किनारे पर कुछ दिनों तक ठहरा रहा, और उसने आखिरी मर्तबा के लिये अपनी जन्मभूमि को देखा। कुछ दिनों में वह फ्रांस के किनारे पर आ पहुंचा। उसके सुरक्षित आ जाने की ख़बर से देश में बेतरह खुशी मनाई गई, समुद्र के किनारे से पेरिस तक के रास्ते में हर जगह जनसमूह ताली बजा कर उसका स्वागत करता था, रात के वक्त हर जगह दिवाली मनाई जाती थी। जब वह पेरिस पहुंचा तो जनसमूह के आनन्द का ठिकाना न रहा।

उसके पहुंचने के वक्त फ्रांस की हालत बहुत खराब थी। वहाँ की सरकार बहुत कमजोर और लालची थी, फ्रांस के दुश्मनों ने मौका पाकर फिर फ्रांस पर आक्रमण कर दिया था। इस वजह से लोग सरकार से बहुत असन्तुष्ट थे, और वे एक ऐसे आदमी की तलाश में थे जो उनके देश की दुश्मनों के हमलों से रक्षा कर सके, जो देश में शान्ति स्थापित कर सके, और जिसकी हुकूमत

के अन्दर सब सुख और शांति का भोग करें। स्वभावतः उनकी दृष्टि इस छोटे अफ़सर पर पड़ी जिसने फ्रांस को कई दफा गृह-युद्ध से बचाया था, जिसने दुश्मनों के ऊपर आश्चर्यजनक विजय पाई थी, और जिसने एक सुदूर मुल्क में जाकर फ्रांस के झंडे को ऊँचा उठाया था। नेपोलियन जनता के इन ख्यालों को अच्छी तरह समझता था और इस लिये उसने इससे फायदा उठाने का इरादा किया।

इसी समय फ्रास में एक दूसरा आदमी भी था जो फ्रांस की गवर्नमेंट से असंतुष्ट था, और जो देश के लिये एक नया विधाता बनाना चाहता था। नेपोलियन इस नये आदमी से मिला और उसकी इतनी चापलूसी की कि वह नेपोलियन के वश में हो गया। उसने उससे कहा—"हमारे देश में कोई सरकार नहीं है, क्योंकि हमारे पास कोई शासन-विधान नहीं है। कम से कम ऐसा नहीं जिसकी हमें ज़रूरत है। अब यह आपकी बुद्धि का काम है कि हमें ऐसा विधान प्रदान करें।"

नेपोलियन ने अपने कुछ साथियों के साथ फ्राँस की सरकार को उलटने का इरादा किया। इस काम में बहुत ख़तरा था—इतना ख़तरा कि शायद नेपोलियन को अपनी जान से हाथ धोना पड़े। इसलिये सब काम बहुत साव-

धानी पूर्वक किया गया। इसके अनुसार एक झूठी खबर उड़ाई गई कि फ्राँस के रिपब्लिक के खिलाफ एक षड़यंत्र रचा जा रहा है। बड़ी कौंसिल को इस बात की सूचना दी गई, और इसलिये उसने यह मत पास किया कि दोनों कौंसिलें दूसरे दिन सेन्ट क्लाउड (पेरिस से कुछ मीलों की दूरी पर) मिलें, और जनरल बोनापार्ट उनको उस स्थान पर सुरक्षित ले जाने के लिये नियुक्त किया गया।

दूसरे दिन जब दोनों कौंसिलें बैठीं। चूंकि हाल को ठीक करने में देरी होगई इसलिए कुछ मेम्बरों ने विरोध करने का इरादा किया। बड़ी कौंसिल ने उस षड़यन्त्र के बारे में पूरा विवरण माँगा। उसी समय नेपोलियन ने सभास्थान में प्रवेश किया और एक भाषण दिया, जिसमें उसने कहा कि वे एक ज्वालामुखी पहाड़ के मुँह पर खड़े थे और वह सीजर और क्रामवेल नहीं था जो अपने मुल्क की आज़ादी का नाश करता।

इतने में उसके स्कूल के साथी बोरीन ने कहा—"जनरल तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो" और उसके आदेशानुसार वह वहाँ से चल दिया। इसके बाद जब उसने छोटी कौंसिल में प्रवेश किया तो सब सदस्यों ने 'उसे कानून के बाहर कर दो' इस आवाज से स्वागत

किया। और ज्यों ही वह पहुंचा त्यों ही सब उसके ऊपर टूट पड़े। उसके ऊपर मुक्के और घूँसे के प्रहार पड़नेलगे और आखीर में उसके सैनिकों ने उसे मूच्छित बाहर निकाला; जब कि उसका कोट फटा पाया गया उसके मुँह से खून निकल रहा था।

इस समय उसके छोटे भाई लूसियन ने—जो छोटी कौंसिल का सभापति था—उसको सफल बनाया। उसने उसके गैर क़ानूनी बनाने के प्रस्ताव को इनकार कर दिया और विरोध में कुर्सी छोड़ कर बाहर चला आया। एक घोड़े पर चढ़ कर उसने एक जोशीला भाषण सैनिकों के सामने दिया, उसने कहा नेपोलियन का जीवन सुरक्षित नहीं था क्योंकि दुष्टों के दल ने कौंसिल के ऊपर कब्जा कर लिया था और उसने सभापति की हैसियत से उन लोगों को सभास्थल खाली करने का आदेश दिया। लेकिन सैनिक कुछ हिचकिचाये और तब उसने नेपोलियन की तलवार छीन कर उसके सीने पर छुवाया और कहा—"मैं शपथ खाता हूँ कि मैं इसी तलवार से अपने भाई को मार डालूँगा अगर उसने कभी रिपब्लिक को उलटने की कोशिश की।" यह झूठ काम कर गया, सैनिकों ने हाल में प्रवेश किया और सब सदस्य दरवाजों और खिड़कियों के जरिये भाग गये। उसी शाम को एक कानून

पास हुआ जिसमें देश का शासन करने के लिये तीन कौंसिल नियुक्त हुए, जिसमें नेपोलियन भी एक था।

इस प्रकार नेपोलियन ने अपने देश के हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में ले ली।

सन् १८०० के मई महीने में नेपोलियन ने अपनी सेना के साथ इटैली पर आक्रमण किया और उसने आल्प्स पर्वत को पार किया जो एक असम्भव सा काम था। एक महीने बाद उसने मैरेंगो नामक स्थान पर बहुत बड़ी विजय पाई। सन् १८०१ में लूनेवील की सन्धि से जर्मनी और फ्रांस के बीच सुलह हो गई और सन् १८०२ के मार्च महीने में अमीन्स की सन्धि से इंगलैण्ड और फ्रांस के बीच लड़ाई बन्द होगई।

नेपोलियन का पहला काम देश में शान्ति स्थापित करना था। देश में बहुत पार्टीबन्दी थी और उनमें इतनी दुश्मनी थी कि वे एक दूसरे की जान लेने को तैयार रहते थे। नेपोलियन ने सब दलों के साथ उदारता और समानता का बर्ताव किया। उसने फ्रांस से भगे हुए अमीरों तथा पुजारियों को मुल्क में आने की इजाजत दे दी और अपने मुल्क में आने पर बिना भेद-भाव के उनको सरकारी नौकरियाँ दीं।

फ्रांस की पहिले की सरकारों ने धर्म को अपने देश

से उखाड़ डाला था, पुजारियों की तनख्वाहें नहीं दी जाती थीं और गिरजाघर बन्द कर दिये गये थे। लेकिन नेपोलियन ने इस बात को महसूस किया कि साधारण जनता के लिये धर्म बहुत आवश्यक है। इसलिये उसने पोप के साथ एक सन्धि की जिसके मुताबिक धर्म का प्रचार फिर से फ्रांस में हो गया। पुजारी सरकारी नौकर होने लगे, उनको सरकार से तनख्वाह मिलने लगी, लेकिन और लोगों के धार्मिक विचारों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया गया।

इसके अलावा उसने देश के लिये सब क़ानूनों का संगठन भी किया। फ्राँस में पहले बहुत से कानून चलते थे, लेकिन अब 'कोड नेपोलियन' के मुताबिक ही सब काम होने लगे। उसने देश में शिक्षा का भी इन्तज़ाम किया, बहादुर सिपाहियों, अफ़सरों और विद्वानों का सम्मान करने के लिये उसने "लीजन आफ़ आनर!" की एक संस्था क़ायम की। उसने देश की हालत में बहुत सुधार किया, जगह जगह पर सड़कें बनाई गईं, नहरें खोली गईं, शहरों और गाँवों का शासन करने के लिये नये नये क़ानून बने।

नेपोलियन के इन कामों से खुश होकर इनाम स्वरूप फ्रेंच जाति ने उसे जन्म भर के लिये कौंसिल बना दिया।

नेपोलियन की इस क़दर तरक्की देखकर कुछ लोग बेहद जलने लगे, क्योंकि उनका ख्याल था कि वह बोरबन राजाओं को फिर से फ्रांस में लायेगा। लेकिन उसे ऐसा न करते देख उन्हें बहुत निराशा हुई, इसलिये उन्होंने उसकी हत्या करने की चेष्टायें कीं। ये चेष्टायें असफल हुईं। क्योंकि नेपोलियन, उसके मंत्रीगण और उसकी पुलिस बहुत सावधान थी। इन सब षड़यन्त्रों का पता लग गया और अपराधियों को सजा दी गई।

सन् १८०४ में उसका और सम्मान करने के लिये वह फ्राँस का सम्राट बनाया गया। इसका गद्दी पर चढ़ने का जलसा बहुत घूमधाम से मनाया गया। नेपोलियन ने पोप के पास एक पत्र लिखा और उसमें उसे आकर अपना राज्याभिषेक करने की प्रार्थना की। पोप पेरिस में आया, उसका बहुत धूमधाम से स्वागत किया गया। इसी समय नेपोलियन और जोसेफ़ीन का विवाह धार्मिक रीति से किया गया।

दूसरी दिसम्बर १८०४ को इतवार के दिन बहुत ही ठंढा जाड़े का दिन था। उस दिन पेरिस के सब निवासी अपने प्रिय सम्राट का राज्याभिषेक देखने के लिये बहुत उत्साहपूर्वक जा रहे थे। नात्रदाम का चर्च बहुत शान शौकत से सजाया गया था। उसमें नेपोलियन

और जोसेफ़ीन के लिये एक बहुत बड़ा तख्त तैयार किया गया था, जो चौबीस पायों पर खड़ा था। नेपोलियन एक शीशे से घिरी हुई शानदार गाड़ी में चढ़ कर अपने अभिषेक के लिये रवाना हुआ, उसकी पोशाक फ्राँस के सबसे बड़े कलाकार के आदेशानुसार बनाई गई थी। पोप ने उसके सर पर तेल छिड़का, उसकी तलवार को आशीर्वाद दिया और ज्यों ही ताज को लेने के लिये बढ़ा त्यों ही नेपोलियन ने उसे स्वयं उठा कर अपने सर पर रख लिया और दूसरा जोसेफ़ीन के सर पर रख दिया।

इस प्रकार राज्याभिषेक की विधि समाप्त हुई। शाम को जब सम्राट अपने भवन को लौटा, तो पेरिस भर में दिवाली मनाई जा रही थी और लोग खुशियाँ मना रहे थे।

सम्राट नेपोलियन

इस प्रकार पैंतीस वर्ष की उमर में कार्सिका के एक ग़रीब वकील का लड़का फ्राँस का सम्राट् बन बैठा, और वह भी जनता के बहुमत से। इस आदमी की तरक्की आश्चर्यजनक थी। जिन लोगों ने उसकी तरक्की देखी, वे आश्चर्यित हो गये।

इसके बाद उसने अपना ध्यान अपने साम्राज्य को सुसंगठित बनाने में लगाया, लेकिन उसके दुश्मनों ने उसे

चैन नहीं लेने दिया। इङ्गलैंड ख़ासतौर से फ्राँस का दुश्मन था; क्योंकि वह फ्राँस का समुद्र पर और व्यापार में तरक्की नहीं देखना चाहता था, इसलिये उसने फ्राँस के दुश्मनों को भड़काया और उसका नतीजा यह हुआ कि रूस, आस्ट्रिया और स्वेडन ने एक संघ बनाया। इन मित्रराष्ट्रों ने बहुत चुपके से पाँच लाख आदमियों की एक सेना तैयार की, जो फ्राँस के हर एक तरफ़ से आक्रमण करती। इङ्गलैंड ने इन सेनाओं के बदले में रुपया देना स्वीकार किया। इङ्गलैंड की नाविक सेना ने भी जिसमें कम से कम पाँच सौ जहाज़ थे, फ्राँस के समुद्र तट पर कब्जा करना शुरू कर दिया।

ये मित्रराष्ट्र नेपोलियन पर अचानक ही आक्रमण करना चाहते थे। लड़ाई की घोषणा बिल्कुल नहीं की गई; और आस्ट्रिया का सचिव भी चुप्पी साधे रहा। उसी समय बहुत चुपके से ८० हज़ार आदमी की एक सेना ने फ्राँस की ओर बढ़ना शुरू कर दिया और रूस का सम्राट एलेग्ज़ैण्डर भी ११६ हज़ार आदमियों की सेना लेकर आस्ट्रिया वालों का साथ देने आ रहा था। नेपोलियन ने अपने दुश्मनों की इन कार्रवाइयों को देखा। उन लोगों ने पूर्वीय हिस्सों ब्लैकफारेस्ट पर कब्जा कर लिया। लेकिन नेपोलियन इस तरह उनके फन्दे में नहीं आ सकता था,

और इसलिये आस्ट्रिया वालों को अकथनीय ताज्जुब हुआ जब कि उन्हें पता चला कि नेपोलियन ने राइन और डैन्यूब नदियों को पार कर दिया था और अब वह उनके पीछे बड़ी सेना के साथ जमा हुआ था। इस तरह से वे अब पीछे की ओर भी नहीं भाग सकते थे, अतः घबड़ा कर इधर-उधर भागने लगे। लेकिन सब जगह उन्हें नेपोलियन के ही सैनिक दिखलाई पड़ते थे। आख़िर में निराश होकर उन्होंने अपने हथियार छोड़ दिये और नेपोलियन के हाथों अपने को सुपुर्द कर दिया। नेपोलियन ने इस प्रकार चालाकी से सब इन्तज़ाम किया था कि बिना खून बहाये ८० हज़ार आदमियों की सेना उसके वश में हो गई। उसका प्रबन्ध उसने ऐसा किया था कि ज्यों ही उसने अपने दुश्मनों के बढ़ने का हाल सुना त्यों ही उसने प्रेस, तार और अन्य समाचार के ज़रिये को बिल्कुल बन्द कर दिया। बीस हज़ार गाड़ियाँ पहले से ही उसकी सेना को राइन नदी के किनारे ले जाने के लिये तैयार की गई थीं। उसने रोज़ के चलने, ठहरने के स्थान इत्यादि का हिसाब बहुत ठीक कर लिया था और इसलिये बहुत तेज़ी के साथ चलकर दो लाख आदमियों ने राइन और डैन्यूब को पार किया और दुश्मन के पिछले भाग में चले आये; जिससे कि उन्हें

(दुश्मनों को) अपने घर से सामान वगैरह नहीं मिल सकता था।

जब एक दिन नेपोलियन अपने आस्ट्रिया वाले कैदियों के बीच से जा रहा था, तो एक अफ़सर ने इस बात पर ताज्जुब प्रकट किया कि फ्राँस के सम्राट के कपड़े इस प्रकार बारिश से भीगे हुए और कीचड़ से भरे हुए थे। क्योंकि आठ दिनों तक जब कि बारिश दिन-रात लगातार हो रही थी, सम्राट ने अपने कपड़े या जूते नहीं उतारे थे और न सोया ही था। नेपोलियन ने उसके जवाब में कहा—"तुम्हारे स्वामी ने मुझे एक सिपाही की तरह रहने को बाधित किया है। मुझे उम्मीद है कि वह इस बात को स्वीकार करेगा कि सम्राट का ताज पहनने से मैं अपने पहले पेशे को भूल नहीं गया हूँ।

उल्म—वह स्थान जहाँ कि जनरल मैक की सेना ने अपने को नेपोलियन के हाथों सुपुर्द किया था—के बाद वह आगे की ओर बढ़ने लगा; क्योंकि उसे अभी रूस की सेना से लड़ना ही था। उसके आगे बढ़ने से आस्ट्रिया भर में आतंक छा गया, आस्ट्रिया का सम्राट अपनी राजधानी छोड़ कर भाग गया। १३ वीं नवम्बर के सुबह के वक्त फ्रेंच सेना के रण-भेरी की आवाज वीयना के आसपास के पहाड़ियों पर सुनाई पड़ी। कुछ दिनों के

बाद दूसरी दिसम्बर १८०५ को जिस दिन उसके अभिषेक का पहला वर्ष समाप्त होता था उसने आस्ट्रलिट्ज़ स्थान पर अपने दुश्मनों के ऊपर बहुत बड़ी फ़तह पाई। लड़ाई दिन भर होती रही और कई दिन के कुहरों के बाद सूरज का आसमान में निकलना फ्रेंच सेना द्वारा बहुत शुभ समझा गया।

नेपोलियन को अपने सैनिकों के आराम का इतना ख्याल रहता था कि वह रणक्षेत्र में अपने हाथों ही उनको मदद पहुंचाता था। उनको वह स्वयं ही पानी पिलाता उनके घावों की मरहम-पट्टी और मरते हुओं को सान्त्वना देता।

इस विजय के बाद अपने सिपाहियों के सामने उसने यह भाषण दिया—"सैनिकों, मैं तुम लोगों से सन्तुष्ट हूँ। आस्ट्रलिट्ज की लड़ाई में अपनी बहादुरी से तुमने मेरी उम्मीदों को सफल बनाया है।"

इसके बाद ही प्रेसबर्ग नामक स्थान पर सुलहनामा लिखा गया और फ्राँस और आस्ट्रिया के बीच शान्ति हो गई।

इसके बाद इङ्गलैंड, रूस और प्रशा मिलकर नेपोलियन के खिलाफ़ लड़ाई करने की सोचने लगे। प्रशा ने सब से पहले नेपोलियन के पास अल्टिमेटम भेजा और

उसके ऊपर चढ़ाई कर दी। जेना नामक स्थान पर दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई। सवेरे चार बजे ही नेपोलियन अपने घोड़े पर चढ़ कर ठिठुरते हुए सैनिकों के पास आया, और छः बजे लड़ाई के लिये हुक्म दिया गया। क़रीब आठ घंटे तक बहुत घमासान लड़ाई होती रही। चार के करीब जब प्रशा की सेना बिल्कुल थक गई थी और भगने ही वाली थी तो उसने मुरट को बारह हज़ार सैनिकों के साथ चढ़ाई करने का हुक्म दिया। प्रशा की सेना बिल्कुल हार गई और चारों तरफ भगने लगी। अँधेरा भी आ गया लेकिन नेपोलियन ने उनको विश्राम न लेने दिया। प्रशा का बादशाह कैदी बनते बनते बचा। इस लड़ाई में प्रशा के सैनिक बीस हजार मारे गये या घायल हुए और बीस हज़ार क़ैदी बनाये गये। इसी वक्त उसके एक जनरल ने आस्टरडैर नामक स्थान पर प्रशा के ऊपर दूसरी विजय पायी।

इसके बाद प्रशा में बढ़कर उनके इस देश के सब क़िलों पर कब्ज़ा कर लिया और यहाँ तक कि २५ वीं अक्टूबर, १८०६ को वह बर्लिन में आ पहुंचा। प्रशा का बादशाह लड़ाई के मैदान से भगकर पोलैण्ड के मैदान की तरफ रूस के बादशाह की शरण में आ गया था। इंगलैण्ड के अलावा सिर्फ़ रूस

ही उसका दुश्मन बाक़ी रह गया था, और इसलिये उसने उनको हराने का इरादा किया। सख्त जाड़े के दिनों में वह रूस की ओर बढ़ा और रूस की सेनाओं को ईल्यू और फ्रीडलैण्ड के मैदानों में सन् १८०७ ई० में हराया।

रूस के सम्राट को नेपोलियन की सत्ता माननी पड़ी और अब सन्धि की बातें चलने लगीं। दोनों सम्राट नीमेन नदी के बीच में एक नाव पर मिले, और नेपोलियन ने अपनी बातों, अपने चेहरे से रूस के जवान सम्राट को कब्ज़े में कर लिया। एलेक्जैंडर ने सर्व प्रथम यही शब्द कहा—"मैं अंग्रेजों से उतना ही नफ़रत करता हूँ जितना आप। मैं उनके खिलाफ आपके सब कामों में सहायता देने को तैयार हूँ।"

अगर ऐसी बात है, तो सब इन्तजाम ठीक-ठीक हो जायगा और हम लोग सुलह कर लेंगे।

टिलसिट नामक स्थान पर जो सुलहनामा हुआ, उससे फ्रांस और रूस एक दूसरे के मित्र बन गये, और दोनों ने एक दूसरे की सहायता देने का बचन दिया। नेपोलियन और रूस के सम्राट के बीच भी बहुत मित्रता हो गई जो बहुत काल तक स्थिर रही।

टिलसिट की संधि के बाद

नेपोलियन जब सम्राट हुआ तो वह अपने भाइयों

बहनों और उन बहादुर सैनिकों तथा अफ़सरों को न भूला जिन्होंने उसे बहुत मदद पहुंचाई थी और जिनकी बहादुरी से वह बहुत खुश हुआ था। वह अपने भाइयों को बहुत प्यार की निगाहों से देखता था, और इसलिये उनको भी बड़े-बड़े ओहदों तक पहुंचाना चाहता था। सम्राट बनकर वह अपने आधीन राजाओं को बनाना चाहता था जो उसकी मातहती में रहें। १८०६ ई० में उसने चार राज्य बनाये। बैवेरिया और वर्टमर्ग के ड्यूकों को उसने बादशाह बनाया। इसी तरह उसने नेपुलस के बोरबन राजाओं को भगा दिया क्योंकि उन्होंने लड़ाई के वक्त दुश्मनों की मदद की थी। उनकी जगह पर उसने अपने बड़े भाई जोसेफ़ को उस जगह का बादशाह बनाया। जोसेफ़ उमर में नेपोलियन से दो बरस बड़ा था, उसने पहले पुजारी बनने की शिक्षा पाई थी, फिर उसके बाद फ़ौज का अफ़सर बनने की और फिर वकील बनने की, लेकिन उसने अपने आपको अपने छोटे भाई की कृपा से एक सल्तनत का बादशाह पाया।

आस्टरलिट्ज़ की लड़ाई के बाद उसने हालैंड को जो पहले प्रजातंत्र था—राजतंत्र में बदल दिया और वहाँ अपने छोटे भाई लुई को बादशाह बनाया। नेपोलियन ने उसकी शिक्षा के लिये एक दफे लिखा भेजा—जब

लोग किसी भी बादशाह के बारे में कहने लगें कि वह अच्छा आदमी है, तो हमें समझना चाहिये कि उसका शासन असफल हुआ है।

उसने अपनी बहन एलिस और पालीन को भी भिन्न-भिन्न जगहों की रानी बनाया। उसकी सबसे छोटी बहन कैरोलीन ने नेपोलियन के प्रिय बहादुर अफ़सर मुरट से शादी करली, जो पहले तो बर्ग का ड्यूक बनाया गया और फिर बाद में नेपुल्स का बादशाह बना।

अपने दो छोटे भाइयों लूसियन और गेरोम से वह बहुत नाराज़ था, क्योंकि दोनों ने अपने मन के मुताबिक शादी करली थी। लूसियन ने तो कभी भी नेपोलियन का कहना न माना, लेकिन गेरोम ने कुछ दिनों बाद अपनी अमेरिकन पत्नी को छोड़ दिया और तब वह वेस्टफैलियर का राजा बनाया गया।

टिलसिट की सन्धि के बाद नेपोलियन का एक ध्येय इङ्गलैण्ड को हराना ही रह गया। दो बरस पहिले नेल-सन ने नेपोलियन की नाविक सेना को ट्रैफैलगर की लड़ाई में हराया था और तभी से वह अंगरेजों का लोहा मानने लगा था। अब उसने इङ्गलैण्ड को नीचा दिखाने की दूसरी तरकीब निकाली और वह था इङ्गलैण्ड के रोज़गार को नष्ट करना। उसने यह हुक्म निकाला कि

कोई भी देश उसके साथ तिजारत न करे, और इङ्गलैण्ड का माल यूरोप न आने पावे और जहाँ पाया जाय वहाँ पर वह नष्ट कर दिया जाय। ऐसा करके नेपोलियन ने अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारी। नेपोलियन के भाई लुई ने अपनी सल्तनत छोड़ दी और उसको पोप से भी लड़ाई करनी पड़ी।

उसके कुछ ही दिनों बाद नेपोलियन ने दो एक ऐसे काम किये जिससे उसको फ़ायदा तो कुछ न हुआ, अल-बत्ते हानि बहुत उठानी पड़ी। पोर्चुगाल का छोटा मुल्क इङ्गलैण्ड का दोस्त था, और उसके जरिये विलायत का माल यूरोप में आ जा सकता था। नेपोलियन ने स्पेन की मदद उस छोटे राष्ट्र को नाश करने के लिये माँगी। दोनों सेनाओं ने पोर्चुगाल पर आक्रमण किया। उस देश का राजा बहुत मुश्किलों से भाग कर ब्राजील चला गया। और पोर्चुगाल पर नेपोलियन का कब्जा हो गया।

पोर्चुगाल के बाद नेपोलियन ने स्पेन पर भी कब्जा करना चाहा। वहाँ का बादशाह चौथा चार्ल्स बहुत ही निकम्मा आदमी था। अपनी जालसाजी और धूर्तता से उसने वहाँ के बादशाह को नेपोलियन के हाथों में अपनी सल्तनत सुपुर्द कर देने को बाधित किया; और फर्डिनाण्ड को भी तख्त का अपना अधिकार त्याग करने को लाचार

किया। इस प्रकार उस खाली जगह पर उसने अपने भाई गेरोम को स्पेन का बादशाह बनाया।

लेकिन स्पेनवासी नेपोलियन की इस करतूत से बहुत नाराज़ हुये। वे विदेशी फ्रेंच लोगों को बहुत नफरत की निगाहों से देखते थे। नेपोलियन ने देश की हालत सुधारने के लिये वहाँ के पुजारियों का रुपया पैसा जब्त कर लिया। इससे ये लोग भी नाराज हो गये और उसके खिलाफ़ विद्रोह की आग भड़काने लगे।

स्पेन का हर एक किसान अपनी खेती बारी को छोड़ कर अपने मज़हब और राजा के लिये लड़ने को तैयार होगया। ये लोग छोटे-छोटे जत्थे बनाते थे, और हिन्दुस्तान के मराठों की तरह लड़ाई किया करते थे। देश भी पहाड़ी था, और फ्रेंच लोगों की बड़ी-बड़ी फौजें जा नहीं सकती थीं। इधर उनको इङ्गलैण्ड से भी बहुत मदद मिली, क्योंकि अंगरेज नेपोलियन के जी-जान के दुश्मन थे। जोसेफ़ तो पहिले ही भाग चुका था, उसके अफ़सरों को कई मर्तबा हार खानी पड़ी—नेपोलियन ने इस स्थिति को देखा और उसके लिये स्वयं स्पेन जाने का इरादा किया।

जाने के पहिले उसने यूरोप को अपनी शान्ति दिखलाने का एक और उपाय सोचा। एरफर्ट नामक स्थान

पर उसने रूस के सम्राट तथा जर्मनी और यूरोप के अन्य राजाओं और मातहतों को बुलाया। करीब पन्द्रह दिन तक उसकी रूस के ज़ार से रोज़ बातें होती रहीं; वह यह नहीं चाहता था कि ज्योंही वह स्पेन में जाय त्योंही उसके दुश्मन उसके ऊपर आक्रमण कर दें। इसलिये वह रूस की मित्रता बनाये रखना चाहता था।

एरफर्ट में वह अपने साथ फ्रांस की सबसे अच्छी थियेटर की कम्पनी भी लाया था। एक दिन का जिक्र है कि जब एक नर्तकी ने इस आशय का गाना गाया कि एक बड़े आदमी की दोस्ती देवताओं की प्रदत्त ख़ास चीज़ तो ज़ार उठा और नेपोलियन का हाथ अपने हाथ में लेकर ताली बजाना प्रारम्भ किया। इसी तरह वहाँ कई दिन तक नाच, बाजे और तमाशे होते रहे; नेपोलियन ने ज़ार से प्रतिज्ञा करा ली कि वह नेपोलियन का दोस्त बना रहेगा। इसके बाद दो लाख सिपाहियों की एक सेना लेकर उसने स्पेन पर आक्रमण किया। उसने बहुत आसानी से अपने मार्ग के सब कंटकों को दूर किया, स्पेन वालों को हराया और मेड्रिड शहर में प्रवेश किया। उसने उस देश में बहुत से सुधार किये लेकिन जरूरी काम की वजह से पेरिस लौट आया।

वह ज़रूरी काम यह था कि आस्ट्रिया ने उसे विपत्ति

में देख कर फिर लड़ाई शुरू कर दी थी। इस आक्रमण में बहुत सी लड़ाइयाँ हुई जिनमें ऐबेबर्ग, एकभूहल, एसलिंग और वैग्रम की लड़ाइयाँ बहुत मशहूर हैं। इन सब लड़ाइयों में फ्रांस की फतह हुई और आखिर में वीयना की सन्धि हुई जिसमें आस्ट्रिया को बहुत कुछ देना पड़ा।

इन सब लड़ाइयों में रैटिजबन का घेरा मशहूर है, क्योंकि इसी स्थान में नेपोलियन को सर्वप्रथम चोट लगी। रैटिजबन जर्मनी में एक शहर है जो डैन्यूब नदी के दक्षिणी किनारे पर आबाद है। आस्ट्रिया के जेनरल ने नदी के पुल को पार किया और शहर को कब्जे में रखने के लिए छः हजार आदमियों की एक फौज छोड़ दी। नेपोलियन वीयना की ओर बढ़ रहा था, लेकिन वह रैटिजबन को आस्ट्रिया के हाथों में छोड़ नहीं सकता था, इसलिये इसे भी लेने का इरादा किया।

अपने घोड़े से उतर कर ज्योंही वह एक अफ़सर से बातें कर रहा था कि बन्दूक का एक निशाना उसके पैरों में लगा, जिससे वह दर्द के मारे ज़मीन पर गिर पड़ा, एक सर्जन लाया गया और उसने उसके घावों की मरहम पट्टी की। यह ख़बर उसके सैनिकों में बहुत तेजी से फैल गई और सब उसके पास आये। किसी ने

भी अपनी लाइन का ख्याल न किया और सब अपने प्रिय सम्राट की हालत देखने के लिये उसके चारों तरफ़ जुट गये। आस्ट्रिया वालों के लिये यह अच्छा मौका था कि वह इन सब एक ही स्थान पर इकट्ठे लोगों पर तोप के गोले बरसावें। नेपोलियन ने इस खतरे को समझ लिया और अपने सिपाहियों की जान बचाने के लिये दर्द के रहते हुए भी घोड़े पर चढ़कर चारों ओर फिरने लगा। सब सेना अपने निर्दिष्ट स्थान पर खड़ी होगई।

इसके बाद सीढ़ी लाई गई और मार्शल लैनीज़ के पचास चुने हुए आदमियों को बढ़ने का हुक्म दिया, लेकिन आस्ट्रिया की तोपों से क़रीब सब के सब मारे गये। दूसरी मर्त्तबा भी पचास आदमी बुलाये गये और वे भी खेत रहे। तीसरी दफ़ा कोई भी आदमी सीढ़ी पर चढ़ने के लिये न आया। मार्शल सबसे बहादुर आदमी था और उसने तब कहा—"मैं भी मार्शल बनने के पहिले तुम लोगों की तरह ग्रिनेडिर था और मैं तुम लोगों को दिखला दूँगा कि मैं अब भी वैसा ही हूँ।" यह कह कर वह .खुद बढ़ने लगा, इतने में और सैनिक भी बढ़ने लगे और कुछ ही देर के बाद वे लोग किले की दीवालों पर दिखाई पड़े और इस प्रकार रेटिज़बन पर

कब्जा हो गया। नेपोलियन ही ऐसा आदमी था जो लोगों को ऐसा बहादुर बना सकता था।

इसी तरह नेपोलियन और भी आगे बढ़ता गया। आख़िरी लड़ाई वैग्रम में पाँचवी और छठीं जुलाई को हुई, जिसमें फ्रेंच लोगों की जीत रही।

इसके बाद वीयना की सन्धि हुई। वह अब हैप्स-वर्ग के ख़ानदान में—जो सबसे बड़ा ख़ानदानी राजकुल समझा जाता था—अपनी शादी करना चाहता था। जोसेफीन से उसको कोई भी लड़का नहीं हुआ था। उसे इस बात का अफसोस था कि उसके बाद उसका वंश चलाने के लिये कोई न रह जायगा। इसलिये बहुत सोच-विचार के बाद टूटते दिल से उसने जोसेफ़ीन को तलाक़ दे दिया और मेरिया लुईसा आस्ट्रिया के सम्राट की लड़की से शादी कर ली। यह शादी सन् १८०१ में हुई और एक साल के बाद ही लड़का पैदा हुआ जो 'रोम का बादशाह' नाम से मशहूर था। लेकिन उसका जीवन बहुत दुखमय रहा और वह राज्य-सुख कभी न भोग सका।

रूस की चढ़ाई

उन देशों में से जो नेपोलियन के इंगलैंड के साथ रोज़गार बन्द करने से बहुत हानि उठा रहे थे, रूस भी

था और इसलिये रूस के सम्राट ने यह घोषणा की कि वह उस रुकावट को ज्यादा देर तक मानने के लिए तैयार न होगा। और भी वजहों से नेपोलियन और एलेक्जैण्डर के बीच मनमुटाव बढ़ता गया और नेपोलियन ने रूस पर आक्रमण करने का पूर्ण इरादा कर लिया। लड़ाई की घोषणा तो न की गई, लेकिन १८१२ ई० के गर्मी के मौसिम में नेपोलियन ने क़रीब छः लाख आदमियों की सेना तैयार की। इस बड़ी सेना में एक तिहाई के करीब बच्चे थे और बाकी उसके साम्राज्य के निवासी थे जिसमें आस्ट्रिया, जर्मनी, इटली, स्पेन और पुर्तगाल के थे।

१८१२ के मई महीने में नेपोलियन साम्राज्ञी मेरिया लुईसा के साथ ड्रेसडन में जब पहुंचा तो उसका बहुत शानदार स्वागत हुआ। वहाँ आस्ट्रिया के सम्राट, प्रशा के बादशाह तथा अन्य छोटे मोटे मातहती बादशाहों ने उससे मुलाकात की। यूरोप के कई हिस्सों पर शासन करने वाले इन्हीं बादशाहों के बारे में यह किस्सा कहा जाता है कि सड़क पर इनकी ऐसी भीड़ को देखकर किसी ने उसकी वजह पूछी, तो उसके मित्र ने जवाब दिया—"यह कोई बात नहीं है, सिर्फ एक राजा करीब से गुजर रहा है।"

नेपोलियन ने उस सेना का जो वहाँ आई हुई थी निरीक्षण किया। ज्योंही वह सिपाहियों की कतारों से गुजरता, तो अक्सर ठहर जाता और किसी सिपाही को नाम लेकर पुकारता। फिर उससे पूछता—"क्या तुम्हें ठीक वक्त पर अपनी तनख्वाह मिली है? या क्या तुम्हारा खाना अच्छा है?" कभी कभी वह सिपाहियों को अपने सामान का गट्ठर दिखलाने को कहता, और खुद इसी बात की जाँच करता कि सब सामान ठीक तो है।"

इन सब बातों से नेपोलियन की सर्वप्रियता बहुत बढ़ जाती थी। उसके सिपाही उसके बारे में कहते थे—"वह हमारा सम्राट है, उसकी सेनायें यूरोप के हर एक हिस्से में मौजूद हैं। बहुत से राजा उसका सम्मान करने के लिये यहाँ इकट्ठा हैं। लेकिन फिर भी वह हम लोगों के हित को सोचने के लिये वक्त पाता है। वह यह भी देखता है कि हमारे साथ अच्छा बर्ताव होता है। हमें वक्त पर तनख्वाह मिलती है और हमें अच्छा खाना मिलता है।"

इसके बाद रूस में मार्च शुरू हुआ। बहुत से शहर और गाँव ले लिये गये और सातवीं सितम्बर को बोरोडिनो की लड़ाई लड़ी गई जिसमें हमेशा की तरह नेपो-

लियन की ही जीत रही। सात दिन के बाद सम्राट एक ऊँचे स्थान पर ठहरा। उसके नीचे सामने की तरफ रूस की प्राचीन राजधानी मास्को के चमकते हुए मकान दिखाई पड़ते थे। हालाँकि नेपोलियन अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच गया था, फिर भी उसे बहुत सी तकलीफ़ें उठानी पड़ी थीं। सिर्फ़ लड़ाई में ही उसके बहुत से सैनिक मारे गये थे, और रूस की चन्दरोज़ा गर्मी बहुत भयानक थी जिससे आदमी और जानवर बहुत जल्दी थक जाते थे। हज़ारों आदमी बीमार पड़ गये थे और दस हज़ार से ज्यादा घोड़े मर चुके थे। रूस की सेनाओं ने एक जगह पर लड़ाई नहीं लड़ी थी, लेकिन उसकी सेनाओं के आते ही भग जाते थे, और अपने ही मुल्क के फ़स्लों को बरबाद करते, शहरों और गाँवों को जलाते जाते थे जिससे फ्रेंच लोगों को कहीं शरण या भोजन न मिले। लेकिन यहाँ भी भाग्य नेपोलियन के खिलाफ़ थी।

शहर के गवर्नर की आज्ञा से शहर के सब आदमी करीब तीन लाख–उस स्थान को छोड़कर और सामान लेकर भाग गये थे। मास्को शहर बिलकुल उजाड़ था। नेपोलियन घोड़े पर चढ़ा, शहर में प्रवेश किया और ज़ार के एक राजमहल में अपना डेरा जमाया। दूसरे ही दिन शहर के कई हिस्सों से धुआँ निकलता दिखाई पड़ा।

रूसवालों ने अपने ही शहर में आग लगा दी थी। आग चारों तरफ फैल गई, ज़ार के भवन तक भी पहुंची और नेपोलियन मुश्किल से अपनी जान बचा सका। उसने सुलह की शर्तें ज़ार के पास भेजीं, लेकिन ज़ार ने उनको इनकार कर दिया।

इधर बेकार वक्त गुज़रता जा रहा था, उनको भोजन की रसद मिलने में बहुत मुश्किलाहट का सामना करना पड़ता था। इधर रूस का जाड़े का मौसम भी आ रहा था। इसलिये १९ वीं अक्टूबर को उसकी बची-खुची सेना ने लौटने का इरादा किया। लौटती बार उन्हें रूस के जाड़े का सामना करना पड़ा। बरफ़ पड़ रही थी, ठंढी-ठंढी हवा उनके चमड़ों तक पहुंचती थी। इससे ज्यादा तकलीफ़ संसार में किसी भी सेना को न उठानी पड़ी होगी। लेकिन फ्रेंच सेना ने धीरता पूर्वक सब का सामना किया। बर्फ़ से ढकी हुई सड़कें शीशे की तरह थीं और उन पर पैर जमाना बहुत मुश्किल काम था, इसलिये बहुत से सिपाही फिसल पड़ते थे, रात को वे लोग आग तैयार कर उसके चारों तरफ सो जाते थे लेकिन सवेरे मरे पाये जाते थे, खाना मुश्किलों से मिलता था। तिस पर भी उनकी विपत्ति बढ़ाने के लिये, रूस की सेनाओं ने पीछे से आक्रमण करना शुरू कर दिया।

आगे बढ़ने पर उसे और भी दर्दनाक खबर मिली। उसने सुना कि उसके दोस्त उसका साथ छोड़ रहे थे और दुश्मन उससे लड़ाई की तैयारी कर रहे थे। उसने यह भी सुना कि किसी ने उसकी गद्दी के खिलाफ साज़िश की थी और इसलिये अपनी सेना को छोड़ कर उसने आगे बढ़ने का इरादा किया। वह पेरिस बहुत मुश्किलों के बाद पहुंच सका।

रूस के बाद

रूस से नेपोलियन का लौटना उसके अन्त का प्रारम्भ माना जा सकता है। लेकिन नेपोलियन का उत्साह अभी भी विजयी था। १८१३ ई० में उसने एक बड़ी सेना अपने दुश्मनों के खिलाफ तैयार की। अब उसके दुश्मन संख्या में बहुत ज्यादा होगये थे। प्रशा रूस की तरफ चला गया था और आस्ट्रिया भी शीघ्र ही यही करने वाला था।

मई के महीने में उसने लटजेन नामक स्थान पर विजय पायी। अगस्त महीने के अन्त में वह ड्रेसडन की लड़ाई में भी विजयी हुआ, लेकिन अक्टूबर में वह लिपजिग की तीन दिन की लड़ाई में हार गया। इस लड़ाई में नेपोलियन को इतना काम करना पड़ता था कि वह थकावट के मारे तोपों और बन्दूकों के गोलों की आवाज़

के बीच सिर्फ पन्द्रह मिनट के लिये झपकी मार लेता था। लिपजिग की लड़ाई के बाद उसकी सेनाओं को पीछे की ओर लौटना पड़ा। उधर वेलिंगडन भी फ्रांस की सेनाओं को स्पेन से बाहर खदेड़ रहा था। जल्दी ही उसने स्पेन की सीमा को पार कर लिया और फ्राँस में आ पहुंचा।

१८१४ के प्रारम्भ के दिनों में आस्ट्रिया, रूस और प्रशा वाले फ्राँस में पहुंच गये थे। इस वक्त पर नेपोलियन ने जितनी होशियारी, जितनी चालकी और जितनी बहादुरी इस संकट के वक्त दिखलाई उतनी शायद ही कभी दिखलाई हो। उसने कुछ लड़ाइयाँ जीती भी, लेकिन उनसे उसका कुछ फ़ायदा नहीं हुआ और उसे आखीर में हार स्वीकार करनी पड़ी। कुछ तो इस वजह से कि उसके दुश्मनों की संख्या उसकी फौजों की संख्या से कई गुना अधिक थी और इसके अलावा फ्रेंच सेनायें पूरे दिल से नहीं लड़ रही थीं। उसके कई विश्वासपात्र अफ़सरों ने भी ऐन मौके पर धोखा दे दिया और दुश्मनों से जा मिले। ३० वीं मार्च १८१४ को पेरिस भी दुश्मनों के कब्जे में आगया और रूस, आस्ट्रिया और प्रशा की सेनाओं ने पेरिस शहर में प्रवेश किया।

फ्राँस की सीनेट ने यह घोषणा कर दी कि नेपोलियन देश का शासन न कर सकेगा। उसने चौथी

अप्रैल को अपनी राजगद्दी का त्याग कर दिया और उसके दुश्मनों ने यह निर्णय किया कि एल्बा का छोटा सा द्वीप उसके कब्जे में कर दिया जाय, जहाँ वह अपने जीवन भर बादशाह की तरह रहेगा।

२० अप्रैल १८१४ को फ़ाउन्टेनब्लू के भवन के शानदार सहन में उसने अपने विश्वास-पात्र सैनिकों से विदा माँगी। जैसे ही वह सैनिकों की कतारों के बीच गुज़र रहा था, त्योंही सब सिपाहियों और अफ़सरों की आँखों से आँसू की धारायें वह निकलीं।

गार्ड का जनरल बाहर निकल आया और उसे नेपोलियन ने छाती से लगाया। फिर उसने सेना के झंडे को चूमा और उसके अन्तिम शब्द यही थे। "मेरे बहादुर बच्चो, तुम्हें नमस्कार, मेरे बहादुर साथियो, नमस्कार; मुझे न भूलना।"

इसके बाद वह गाड़ी में बड़ी मुश्किल से चढ़ा; अपनी आँखों को दोनों हाथों से बन्द कर लिया और तब वह गाड़ी फ्राँस के सर्वश्रेष्ठ पुत्र कोविदेश के लिये लेकर चल दी। चौथी मई को वह एल्बा में पहुंचा; उसके पहिले ही दिन फ्राँस के बोरबन बादशाह अठारहवें लुई ने पेरिस में प्रवेश किया और फिर गद्दी पर बैठा।

लेकिन अठारहवाँ लुई इस गद्दी पर बहुत दिनों तक

शान्तिपूर्वक न बैठ सका। लोग बादशाह से असन्तुष्ट हो चले। क्योंकि उसने वही पुरानी चालें जारी कर दीं जिनके लिये फ्राँस में विप्लव हुआ। सेना तो असन्तुष्ट थी ही, वह फिर उस बहादुर सैनिक को चाहती थी जो कई मर्तबा उनको विजय की लड़ाइ में लेगया था। नेपोलियन ने इस असन्तोष से लाभ उठाना चाहा। शीघ्र ही उसके पुराने अफ़सरों में यह ख़बर जोरों से फैल गई और लोग बहुत खुश हुए।

अगले साल के बसन्त के मौसम में नेपोलियन एल्बा से अगरेजों की आँखें बचा कर चला आया। फ्राँस के तट पर वह पहली मार्च को उतरा।

उसके पुराने अफ़सर और सिपाही फिर उसकी ओर आगये। खून का एक बूँद भी बहाये बिना भी वह पेरिस पहुंच गया। अठारहवाँ लुई पहले ही दिन भग गया था। जब उसने ट्यूलरीज़ के पुराने भवन में फिर से प्रवेश किया तो पेरिस की जनता ने खुले दिल से उसका स्वागत किया।

लेकिन उसकी यह सफलता क्षणिक ही रही। उसके दुश्मनों ने उसे चैन नहीं लेने दिया। चारों ओर दुश्मन भेड़ियों की तरह उस पर टूट पड़े। १८ वीं जून को वाटरलू की मशहूर लड़ाई लड़ी गई, जिसमें अंगरेजों और प्रशावालों ने उसे बुरी तरह हराया। वह पेरिस

को भग आया और उससे बाद मैल मेसाँ (पेरिस से कुछ दूर पर) के भवन में रहने लगा। यहीं पर तलाक के बाद जोसेफीन रहती थी, लेकिन कुछ ही महीनों पहले उसका मृत्यु होगई थी।

उसका जीवन अब भी खतरे में था, क्योंकि प्रशा के निर्दयी जनरल ब्लूशर ने यह चेतावनी दी थी कि अगर वह नेपोलियन को जिन्दा पायेगा तो उसे कुत्ते की तरह मार डालेगा। उसने अमेरिका भग जाने का इरादा किया और इसलिये रोशफोर्ट नामक स्थान पर आया, लेकिन भागने का कोई रास्ता न देख उसने अपने आपको यह यक़ीन कर अंगरेजों के हाथों में सुपुर्द कर दिया, कि ब्रिटिश उसके साथ न्याय करेंगे।

पन्द्रहवीं जुलाई को वह अपने रक्षकों के साथ जहाज़ पर आ पहुंचा और शीघ्र ही अपने अच्छे स्वभाव के कारण सब का दोस्त बन गया। कुछ दिनों में वह जहाज़ इंगलैण्ड के लिये रवाना हुआ लेकिन अंगरेज़ी सरकार ने उसे इङ्गलैण्ड में उतरने न दिया, बल्कि यह हुक्म दिया कि वह अटलांटिक सागर के बीच स्थिति सेन्ट हेलेना नामक द्वीप पर जिन्दगी भर रहे।

आठवीं अगस्त को वह नार्दम्बरलैण्ड नामक जहाज़ पर चढ़ कर सेन्ट हेलेना के लिये रवाना हुआ। इस

दुखमय वक्त में भी उसने अपने उदार स्वभाव को न छोड़ा, और अपने पुराने जहाज़ के कप्तान को उसके अच्छे वर्ताव के लिये धन्यवाद दिया।

अंगरेजी सरकार ने भी उसके साथ अच्छा वर्ताव नहीं किया। उसे पहले तो अपने प्रिय साथियों को छोड़ना पड़ा जो उसके साथ तक आना चाहते थे; इसके अलावा जहाज़ में उसे कोई सुविधा न दी गई; उसको चिढ़ाने के लिये ब्रिटिश सरकार ने यह हुक्म कर दिया कि वह 'सम्राट्' कह कर न पुकारा जाय बल्कि सिर्फ जनरल बोनापार्ट के नाम से पुकारा जाय।

सेन्ट हेलेना पहुंचने पर उसे आराम देने की कोई कोशिश न की गई। पहुंचने के कुछ दिनों बाद वह लाँगवुड नामक मकान में ठहराया गया। यह मकान एक ज़माने में घोड़ों का अस्तबल था; उसकी दीवालें गिरी हुई थीं; उसकी आवहवा खराब थी, और चूहे तो बेतरह थे उसे बाहर निकलने की भी कोई आज़ादी नहीं थी, जब वह बाहर जाता तो एक अंगरेज अफ़सर का उसके साथ रहना बहुत जरूरी था; यहाँ तक कि रात को जब वह सोता था तो भी एक सन्तरी बैठा दिया जाता था। उसके अलावा उसका गवर्नर सर हडसन भी बहुत नीच और बेरहम शख्श था, नेपोलियन को हर तरह से चिढ़ाने या दुखी

बनाने का प्रयत्न करता रहता। उसके व्यवहार से तंग आकर उसने पहले तो घुड़सवारी और फिर घर के बाहर निकलना भी बन्द कर दिया। वह अपना अधिक वक्त पढ़ने लिखने और अपनी आत्मकथा लिखने में व्यतीत करता था। आखिरी दिनों में बागवानी का भी शौक़ उसे हो आया था, और अंगरेजी भाषा को भी सीखने का प्रयत्न किया।

उसके साथ उसके कुछ मित्र भी आए थे; उनके बीच में अक्सर लड़ाइयाँ हो जाया करती थीं और नेपोलियन उनके झगड़ों को शान्त करता। उसे बच्चों के लिये बहुत प्रेम था और बच्चे भी उसे जी जान से चाहते थे।

उसको आख़िरी दिनों में एक बीमारी हो गई थी जो कि दिन पर दिन बिगड़ती ही गई। पाँचवीं मई १८२१ को शाम के वक्त जब कि सूरज की किरणें डूब रही थीं, उस महान आत्मा ने इस संसार को सदा के लिये त्याग दिया। दिन भर तो तूफ़ान का जोर रहा था, लेकिन शाम के वक्त बिल्कुल शान्ति हो गई थी, मानो प्रकृति भी उसे ऐसे शान्त समय में अपनी गोद में लेना चाहती थी।

उसकी मृत्यु की ख़बर सुनते ही सब द्वीप-निवासी उसका दर्शन करने के लिये आये। ब्रिटिश सिपाहियों ने उसको दो पेड़ों के बीच के शान्त स्थान में—जो उसे बहुत

प्रिय था—उसकी क़ब्र बनायी। उसकी क़ब्र पर सर हडसन लो ने उसका नाम भी नहीं खुदवाने दिया।

उन्नीस बरस बाद, १५ वीं अक्टूबर १८४० को सम्राट का मृत शरीर इस एकांत द्वीप से हटाया गया। यह एक जंगी जहाज में फ्रांस लाया गया; और होटेल डिइनवैलीड्स के अन्दर जहाँ उनके अन्य सिपाहियों की क़ब्रे थीं वह लिटाया गया। वहीं पर उसका मृत शरीर सदा के लिये विश्राम कर रहा है।

॥ समाप्त ॥

बालकों के लिये बिल्कुल नई चीज़

सचित्र, मनोरञ्जक, शिक्षाप्रद, सरल, रोचक, जीवन को ऊँचा उठानेवाली सस्ती पुस्तकें

छात्र-हितकारी पुस्तकमाला ने छोटे-छोटे बालकों को आदर्श महापुरुष बनाने और सुखमय जीवन बिताने के लिए महापुरुषों की सरल जीवनियाँ बच्चों ही के लायक, मनोरञ्जक भाषा में, मोटे टाइप में, निकालने का निश्चय किया है। नीचे लिखी पुस्तकें प्रकाशित होगई हैं। प्रत्येक का मूल्य ।) है।

१—श्रीकृष्ण
२—महात्मा बुद्ध
३—रानाडे
४—अकबर
५—महाराणा प्रताप
६—शिवाजी
७—स्वामी दयानन्द
८—लो० तिलक
९—जे० एन० ताता
१०—विद्यासागर
११—स्वामी विवेकानन्द
१२—गुरु गोविन्दसिंह
१३—वीर दुर्गादास
१४—स्वामी रामतीर्थ
१५—सम्राट अशोक
१६—महाराज पृथ्वीराज
१७—श्रीरामकृष्ण परमहंस
१८—महात्मा टॉल्स्टॉय
१९—रणजीतसिंह
२०—महात्मा गोखले
२१—स्वामी श्रद्धानन्द
२५—गुरु नानक
२६—महाराणा सांगा
२७—पं० मोतीलाल नेहरू
२८—पं० जवाहरलाल नेहरू
२९—श्रीमती कमला नेहरू
३०—मीराबाई
३१—इब्राहिम लिंकन
३२—अहिल्याबाई
३३—मुसोलिनी
३४—हिटलर
३५—सुभाषचन्द्र बोस
३६—राजा राममोहनराय
३७—लाला लाजपत राय
३८—महात्मा गाँधी
३९—महामना मालवीय जी
४०—जगदीशचन्द्र बोस
४१—महारानी लक्ष्मीबाई
४२—महात्मा मेजिनी
४३—महात्मा लेनिन
४४—महाराज छत्रसाल
४५—अब्दुल गफ्फार ख़ाँ
४६—मुस्तफा कमालपाशा
४७—डी वेलरा
४८—स्टालिन

...री पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग।